PHILOSOPHY
PG III Sem. (Indian Logic)
अनुमान (बौद्धदर्शन)

Dr. S. K. Singh
Mob - 94314499...

→ बौद्ध दार्शनिक मात्र दो ही प्रमाणों को स्वीकार करते हैं - प्रत्यक्ष और अनुमान। बौद्ध मतानुसार प्रत्यक्ष की विषय-वस्तु स्वलक्षण है जो सर्वथा निर्विशेष है। अनुमान की विषय-वस्तु संवृत्ति है, जो सामान्य है।

→ बौद्ध न्याय के आधार-स्तम्भ बौद्ध दिग्गनाग के अनुसार 'ज्ञात अविनाभाव संबंध द्वारा नान्तरीयक अर्थ का दर्शन ही अनुमान है। यहाँ 'नान्तरीयक' का अर्थ है - एक वस्तु का दूसरी वस्तु के अभाव में कभी भी न हो पाना; जैसे - सूर्योदय होने पर भूमि पर प्रकाश हो जाना है।

→ जिस व्यक्ति को दो वस्तुओं के नान्तरीयक अथवा अविनाभाव संबंध का ज्ञान हो जाता है उसे ही नान्तरीयक संबंध के एक सम्बन्धी का दर्शन होने पर दूसरी वस्तु का ज्ञान होता है, यथा, जो अग्नि और धूम के नान्तरीयक संबंध का ज्ञाता है उसे ही धूम्र दर्शन से अग्नि का बोध होता है।

→ नान्तरीयक हेतु त्रिरूपता संपन्न है अर्थात इसके तीन लक्षण हैं-

(i) लिंग का अनुमेय में होना (पक्ष में रहना)
(ii) लिंग का सपक्ष में निश्चित उपस्थिति अथवा सत्व
(iii) लिंग का विपक्ष में निश्चित अनुपस्थिति अथवा असत्व

इस त्रिरूप लिंग के द्वारा साध्यरूप विषय अथवा अर्थ का ज्ञान होता है।

→ इस प्रकार बौद्ध मतानुसार हेतु अथवा लिंग के तीन रूप हैं-

(i) लिंग का अनुमेय में होना (सत्व) प्रथम रूप है। मात्र लिंग दर्शन से अनुमिति सम्भव नहीं। यदि लिंग अनुमेय में न हो तो कभी भी लिंग के द्वारा साध्य (अनुमेय) की उत्पत्ति नहीं होगी; यथा - धूम्र (लिंग) के दर्शन से अग्नि (साध्य या लिंगि) की प्रतिपत्ति इसलिये हो पाती है कि धूम्र (लिंग) का अग्नि (चिह्न) ही इसलिये समझा जाता है कि धूम्र अग्नि में उपस्थित रहता है। इस प्रकार 'लिंग' होने का अर्थ ही है - 'अनुमेय अथवा साध्य में अविनाभाव (निरपवाद रूप) से उपस्थित होना।

(ii) लिंग का द्वितीय रूप उसका सपक्ष में निश्चित सत्व है। जिस स्थान में साध्य (यथा - अग्नि) की सत्ता पहले से निश्चित हो उसे सपक्ष कहते हैं। सपक्ष और पक्ष में समानता यह होती है कि दोनों में साध्य उपस्थित होता है, किन्तु दोनों में असमानता यह है कि पक्ष में साध्य की उपस्थिति संदिग्ध होती है जबकि सपक्ष में साध्य की उपस्थिति असंदिग्ध अथवा निश्चित होती है।

(iii) लिंग का तृतीय रूप लिंग का असपक्ष में निश्चित असत्व है। वह स्थान जहाँ साध्य (लिंगि) का सदैव अभाव रहता है असपक्ष या विपक्ष कहलाता है; जैसे - नदी में धूम्र का अभाव। पर्वत पर अग्नि के अनुमान में धूम्र लिंग है, अग्नि अनुमेय अथवा साध्य है, पर्वत पक्ष है, पाकशाला सपक्ष है तथा नदी, ताल इत्यादि विपक्ष या असपक्ष है।

Scanned with CamScanner